सूर्य चालीसा

॥दोहा॥

कनक बदन कुण्डल मकर,

मुक्ता माला अङ्ग।

पद्मासन स्थित ध्याइये,

शंख चक्र के सङ्ग।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

॥चौपाई॥

जय सविता जय जयति दिवाकर,

सहस्रांशु! सप्ताश्व तिमिरहर।

भानु! पतंग! मरीची! भास्कर!

सविता! हंस सुनूर विभाकर।

विवस्वान, आदित्य, विकर्तन,

मार्तण्ड हरिरूप विरोचन।

अम्बरमणि, खग, रवि कहलाते,

वेद हिरण्यगर्भ कह गाते।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

सहस्रांशुप्रद्योतन, कहि कहि,

मुनिगन होत प्रसन्न मोदलहि।

अरुण सदृश सारथी मनोहर,

हाँकत हय साता चढ़ि रथ पर।

मंडल की महिमा अति न्यारी,

तेज रूप केरी बलिहारी।

उच्चैः श्रवा सदृश हय जोते।

देखि पुरंदर लज्जित होते।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

मित्र १. मरीचि २. भानु

३. अरुण भास्कर ४. सविता।

५. सूर्य ६. अर्क ७. खग

८. कलिकर पूषा ९. रवि।

१०. आदित्य ११. नाम लै,

हिरण्यगर्भाय नमः १२. कहिकै।

द्वादस नाम प्रेम सो गावें,

मस्तक बारह बार नवावै।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

चार पदारथ सो जन पावै,

दुःख दारिद्र अघ पुञ्ज नसावै।

नमस्कार को चमत्कार यह,

विधि हरिहर कौ कृपासार यह।

सेवै भानु तुमहिं मन लाई,

अष्टसिद्धि नवनिधि तेहिं पाई।

बारह नाम उच्चारन करते,

सहस जनम के पातक टरते।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

उपाख्यान जो करते तवजन,

रिपु सों जमलहते सोतेहि छन।

छन सुत जुत परिवार बढतु है,

प्रबलमोह को फँद कटतु है।

अर्क शीश को रक्षा करते,

रवि ललाट पर नित्य बिहरते।

सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत,

कर्ण देस पर दिनकर छाजत।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

भानु नासिका वास करहु नित,

भास्कर करत सदा मुख कौ हित।

ओंठ रहैं पर्जन्य हमारे,

रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे।

कंठ सुवर्ण रेत की शोभा,

तिग्मतेजस: कांधे लोभा।

पूषां बाहू मित्र पीठहिं पर,

त्वष्टा-वरुण रहम सुउष्णकर।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

युगल हाथ पर रक्षा कारन,

भानुमान उरसर्मं सुउदरचन।

बसत नाभि आदित्य मनोहर,

कटि मंह हँस, रहत मन मुदभर।

जंघा गोपति, सविता बासा,

गुप्त दिवाकर करत हुलासा।

विवस्वान पद की रखवारी,

बाहर बसते नित तम हारी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

सहस्रांशु सर्वांग सम्हारै,

रक्षा कवच विचित्र विचारे।

अस जोजन अपने मन माहीं,

भय जग बीज करहुँ तेहि नाहीं।

दरिद्र कुष्ट तेहिं कबहुँ न व्यापै,

जोजन याको मनमहं जापै।

अंधकार जग का जो हरता,

नव प्रकाश से आनन्द भरता।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

ग्रह गन ग्रसि न मिटावत जाही,

कोटि बार मैं प्रनवौं ताही।

मन्द सदृश सुतजग में जाके,

धर्मराज सम अद्भुत बाँके।

धन्य-धन्य तुम दिनमनि देवा,

किया करत सुरमुनि नर सेवा।

भक्ति भावयुत पूर्ण नियमसों,

दूर हटतसो भवके भ्रमसों।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

परम धन्य सो नर तनधारी,

हैं प्रसन्न जेहि पर तम हारी।

अरुण माघ मंह सूर्य फाल्गुन,

मध वेदांगनाम रवि उदयन।

भानु उदय वैसाख गिनावै,

ज्येष्ठ इन्द्र आषाढ़ रवि गावै।

यम भादों आश्विन हिमरेता,

कातिक होत दिवाकर नेता।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अगहन भिन्न विष्णु हैं पूसहि,

पुरुष नाम रवि हैं मलमासहिं।

॥दोहा॥

भानु चालीसा प्रेम युत,

गावहि जे नर नित्य।

सुख सम्पत्ति लहै विविध,

होंहि सदा कृतकृत्य॥

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य चालीसा पढ़े

- हनुमान चालीसा
- शिव चालीसा
- दुर्गा चालीसा
- शनि चालीसा
- गणेश चालीसा
- लक्ष्मी चालीसा
- राम चालीसा
- विष्णु चालीसा
- गायत्री चालीसा
- काली चालीसा
- भैरव चालीसा
- सरस्वती चालीसा
- कृष्ण चालीसा
- सूर्य चालीसा
- महावीर चालीसा
- साईं चालीसा
- महाकाली चालीसा
- तुलसी चालीसा
- बगलामुखी चालीसा
- गोरख चालीसा
- गोपाल चालीसा
- नवग्रह चालीसा
- रविदास चालीसा
- बाला जी चालीसा
- महालक्ष्मी चालीसा
- पार्वती चालीसा

- खाटू श्याम चालीसा
- रामदेव चालीसा
- राधा चालीसा
- विश्वकर्मा चालीसा
- पितर चालीसा
- बटुक भैरव चालीसा
- जाहरवीर चालीसा
- गिरिराज चालीसा
- नर्मदा चालीसा
- प्रेतराज चालीसा
- संतोषी चालीसा
- गंगा चालीसा
- शारदा चालीसा
- ललिता चालीसा
- अन्नपूर्णा चालीसा
- श्री वैष्णो चालीसा
- परशुराम चालीसा
- विन्ध्येश्वरी चालीसा
- ब्रह्मा चालीसा
- शाकम्भरी चालीसा
- राणी सती चालीसा
- गंगाराम चालीसा
- बालक नाथ चालीसा
- मोहन राम चालीसा
- शीतला चालीसा